



Original Article

असहमति का विवेक प्रदर्शित करती फिल्म 'पिंक'

डॉ. दिपक जाधव 'अक्षर'

सहयोगी प्राध्यापक एवं अध्यक्ष हिंदी विभाग

वेणूताई चव्हाण कॉलेज, कराड

Manuscript ID:

IJAAR-C130324

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 114 - 119

Submitted: 20 Jan. 2026

Revised: 30 Jan. 2026

Accepted: 10 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

डॉ. दिपक जाधव 'अक्षर'

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22785634

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22785634>



Creative Commons



सार:

2016 में प्रदर्शित 'पिंक' फिल्म में कहीं भी पिंक शब्द का प्रयोग नहीं किया गया है। इसके बावजूद पिंक प्रतीकात्मक अर्थ में प्रयुक्त होते हुए स्त्रीत्व की पहचान का रंग बन जाता है। यह रंग पारंपरिक रूप में स्त्रीत्व, कोमलता और संवेदनशीलता से जुड़ा है। समाज में अक्सर यह मान लिया जाता है कि जो कोमल है, वह कमजोर है। जो कमजोर है, उसे रौंदा जा सकता है। लड़कियां खूबसूरत, छुईमुई, शांत, सुकुमार होने के नाते उन्हें भी कमजोर माना जाता है। लेकिन यहीं कमजोरी मानी जाने वाली लड़कियां जब खड़ी हो जाती है तो पुरुषसत्ताक व्यवस्था के परंपरागत ढांचों में सेंध लगाने का काम करती है। यहां 'पिंक' अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करती लड़कियों का प्रतीक बन जाता है।

मुख्य शब्द: पिंक, नो(No), सहमति, कंप्रोमाइज, पितृसत्ताक व्यवस्था, यथार्थ, आत्मरक्षा, जीरो एफआईआर.

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

डॉ. दिपक जाधव 'अक्षर'. (2026). असहमति का विवेक प्रदर्शित करती फिल्म 'पिंक'. International Journal of Advance and Applied Research, 13(3), 114 - 119. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22785634>

विषय प्रवेश:

भारतीय सभ्यता और संस्कृति एक ओर तो विश्व को वसुधैवकुटुंबकम का नारा देती है, वहीं दूसरी ओर अपने ही समाज के बड़े तबके को मनुष्य तक मानने से इंकार करती है। ठीक इसी तरह नारी के सम्मान में एक ओर कसीदे पढ़ उसे देवी

का दर्जा देने की शोखी बघारती है और यथार्थ में उसे मानवोचित अधिकारों के काबिल भी नहीं समझती। साल, काल, युग बदलता गया, स्थितियों में समय के दबाव ने कुछ बदलाव जरूर किए लेकिन मुख्य बदलाव मानसिकता और



व्यवहार में आना अपेक्षित था जिसका अभाव आज भी यत्र तत्र घटित महिला उत्पीड़न की घटनाओं से दिखाई देता है।

अनिरुद्ध राय चौधरी द्वारा निर्दिष्ट एवं रितेश शाह द्वारा लिखित 'पिंक' 2016 में प्रदर्शित हिंदी फिल्म है। इसमें दीपक सहगल के किरदार में अमिताभ बच्चन तो मीनल अरोड़ा के किरदार में तापसी पन्नू प्रमुख भूमिकाएं निभाते हैं। पिंक फिल्म में किसी भी किरदार से अधिक महत्वपूर्ण इसकी कहानी है। फिल्म की कहानी तीन सहेलियों और तीन दोस्तों के आपसी समझ, संस्कार, सहमति और टकराव की कहानी है जो सामान्य प्रतीत होते हुए भी बेहद जरूरी, खास और विशेष है। कहानी के संवाद, वकीलों की दलीलें कहानी का प्राण तत्व है। कहानी का प्लॉट देश की राजधानी दिल्ली है।

दिल्ली में रहने वाली स्वतंत्र, आत्मनिर्भर, उच्च शिक्षित एवं मॉडर्न कहीं जाने वाली तीन सहेलियां मीनल अरोड़ा, फलक अली और एंड्रीया अपने कॉमन दोस्त विश्वा के कारण राजवीर सिंह की पार्टी में अपनी इच्छा से चली जाती है। वहां शराब पीना, मौज मस्ती करना, संगीत चलता है। पहले तो सब कुछ ठीक ही चल रहा था। लेकिन राजवीर और डंपी के दिमाग में कुछ और ही पक रहा था। डंपी वॉशरूम के बहाने फलक को एक कमरे में ले जाता है और उसके साथ फ्लर्ट करने लगता है। राजवीर सिंह मीनल के साथ जबरदस्ती करने की कोशिश करता है। मीनल के ना कहने, मना करने पर भी वह नहीं रुकता। वह मीनल को बाहों में जकड़ लेता है। मीनल अपने आप को असहज महसूस करते हुए आत्मरक्षा में शराब की बोतल राजवीर के सर पर मार देती है। राजवीर घायल हो जाता है। मौका देखकर तीनों सहेलियां जैसे जैसे बच निकलती हैं। लेकिन यहीं से डराने-धमकाने का एक धिनौना खेल शुरू हो जाता है। लड़कियों को हर तरह से परेशान करने की कोशिश होती है।

राजवीर सिंह का खास दोस्त अंकित, जो इस पूरी घटनाक्रम में कहीं भी नहीं है, वह इस हमले का बदला लेने के लिए उतावला हो जाता है। मकान मालिक को इन लड़कियों को घर से निकलने की धमकी दी जाती है। मकान मालिक के न मानने पर उनकी स्कूटी पर गाड़ी चढ़ाई जाती है। अंकित मीनल को फोन कर धमकता है कि वह कीमत चुकाने के लिए तैयार रहे। एंड्रीया अपने दोस्त से मिलने चली जाती है, तब उसे एहसास होता है कि कोई उस पर नजर रखे हुए हैं। फलक अपने दोस्त जावेद को सारी बातें बताती है तब वह भी साथ देने के बजाय कहता है कि आखिर तुम्हें लड़कों की पार्टी में जाने की जरूरत ही क्या थी। इस प्रकार लड़कियों को अपने घर से बाहर निकलना तक मुश्किल कर दिया जाता है। विश्वा भी राजवीर की ऊपर तक पहुंच होने की बात कहते हुए फलक को कंप्रोमाइज करने की सलाह देता है। वह कहता है की "तुम लड़कियां हो, मतलब यार बात बढ़ेगी तो बदनामी किसकी होगी? उसकी या तुम्हारी?.... कंप्रोमाइज करते हैं। सॉरी बोलो बात खतमा"।¹

मीनल डरने वाली लड़की नहीं है। वह राजवीर की शिकायत करने पुलिस थाने जाती है। लेकिन पुलिस उसकी शिकायत नहीं लेती। उल्टे उसे ही कटघरे में खड़ा करते हुए पुलिस ऑफिसर कहता है, तुम तो खुद अपनी मर्जी से वहां गई थी, वहां शराब पी। नशे में तो तुम भी थी। तुमने उसकी एक आंख फोड़ी है तो तुम्हारे ऊपर भी चार्ज बनते हैं। तुम इस चक्कर में मत पड़ो वरना रोज पुलिस थाने के चक्कर काटने पड़ेंगे। लेकिन मीनल रुकती नहीं, अपनी बॉस की सहायता से जीरो एफआईआर करवाती है।

रात को कमरे में आने पर कंप्रोमाइज को लेकर मीनल और फलक में कहा सुनी होती है। फलक चाहती है कि इस पछड़े से बाहर निकाले। चाहे उसके लिए कंप्रोमाइज ही क्यों न



करना पड़े। सुबह फलक राजवीर से कहती है कि हम कंप्रोमाइज करने के लिए तैयार हैं। राजवीर मीनल से सौरी सुनना चाहता है। बात को सहज बनाने के लिए फलक सौरी कहती है। राजवीर उत्तेजित होकर अपना आपा खो देता है। इससे फलक भी उखड़ जाती है और माफी के बजाय पुलिस कार्रवाई की याद दिलाती है। राजवीर के रवैया से फलक समझ जाती है कि यह लड़के न तो कंप्रोमाइज के लायक है, न माफी मांगने के। अब फलक को लगता है, मीनल ने जो किया, वह सही ही किया है।

अगले दिन फलक ऑफिस जाती है तो पाती है कि ऑफिस के क्लीग उसे अलग ही नजर से देख रहे हैं। बॉस फलक को केबिन में बुलाकर दिखता है कि उसकी तस्वीर के साथ मोबाइल नंबर लिखकर गंदा मैसेज सर्कुलेट किया है। बॉस कंपनी के रेप्युटेशन का हवाला देकर फलक को नौकरी से निकाल देता है। वहीं दूसरी ओर रोज की तरह जॉगिंग के लिए गई हुई मीनल को जबरदस्ती एक वैन में घसीटा जाता है। अंकित और डंपी नीचता पर उतर आते हैं। मीनल को अगुआ कर उसे दिनभर भूखे-प्यासे घुमाया जाता है और बेहोशी की हालत में कॉलोनी के पास छोड़ा जाता है। पुलिस में शिकायत करने का बदला और मीनल के मन में खौफ बिठाने हेतु उसे यह एहसास दिलाया जाता है कि वे जब चाहे तब उसके साथ कुछ भी कर सकते हैं। इस तरह से तीनों सहेलियों के साथ एक के बाद एक हद से शुरू हो जाते हैं। उन्हें समझ नहीं आता कि वे इसका सामना कैसे करें? उन्हें लगता है कि उन्हें अब यह शहर छोड़ना चाहिए।

मीनल को किडनैप करने की घटना को दीपक सहगल ने देख लिया था। वह पुलिस को फोन कर बताता है लेकिन उम्र के कारण वह वैन का नंबर देख नहीं पता और न ही मीनल को बचा पता है। वैन का नंबर ना होने के कारण पुलिस भी कोई

सहायता नहीं करती। खास बात यह है कि दीपक सहगल मीनल को अगवा करने की शिकायत एक महिला पुलिसकर्मी से करता है जो एक जवान लड़की को किडनैप किए जाने की गंभीरता से पूरी तरह लापरवाह दिखाई देती है। दीपक सहगल वकालत छोड़ चुका वकील है, जो लड़कियों की मदद करने आगे आता है। फिल्म का असली संघर्ष यहीं से शुरू होता है और यह संघर्ष सड़कों के बजाय न्यायिक परिक्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हुए सामाजिक मनोभाव को बदलने की प्रक्रिया में पूरजोर कदम साबित होता है।

राजवीर सिंह के चाचा प्रभावशाली व्यक्ति है। राजवीर की शिकायत बाद में आने के बावजूद उसे रजिस्टर में पहले की तारीख को दिखाई जाती है। सारे दांव और फांसे लड़कियों के खिलाफ चलाए जाते हैं। राजवीर के चाचा के दबाव में पुलिस 307 'अटेंप्ट टू मर्डर' का चार्ज लगाकर मीनल को फरार घोषित कर घर से गिरफ्तार करती है। मीनल की बेल ना हो इसलिए उसे शुक्रवार के दिन गिरफ्तार किया जाता है। सोसायटी के लोग भी बिना कुछ जाने इन लड़कियों पर लांछन लगाने लगते हैं। और वे मानते हैं कि लड़कियां अकेली रहेगी तो ऐसा ही होगा। इन्होंने भी कुछ न कुछ किया होगा तभी तो पुलिस ने पकड़ा है। यह धारणा हमें न केवल इस सोसायटी में बल्कि हमारे समाज में, समाज के हर तबके में दिखाई देती है। सच को जानना-समझना और उसके पक्ष में खड़े रहने की हिमाकत करना, हमारे समाज की बहुत बड़ी कमी है।

दीपक सहगल खुद लड़कियों के कमरे पर जाता है तो उसे पता चलता है कि लड़कियों पर अटेंप्ट टू मर्डर, अटेंप्ट टू एक्सटॉर्ट, प्रॉस्टिट्यूशन के चार्ज लगाए गए। वह समझ जाता है कि मीनल को जानबूझकर शुक्रवार के दिन उठाया गया है ताकि उसकी बेल ना हो सके। फलक और एंड्रीया को लगता है कि मीनल को नॉन बेलेबल ऑफेंस में गिरफ्तार किया गया



है। तब दीपक सहगल कहता है कि “ वूमैस और माइनर्स को बेल मिल सकता है नॉन-बेलेबल ऑफेंस के लिए।”²

दीपक सहगल अपने जमाने का नामी वकील है, किसी कारणवश उसने वकालत छोड़ दी थी। दीपक द्वारा सुझाया गया लॉयर भी मीनल की बेल नहीं कर पता। लड़कियां बहुत डरी और साहमी हुई है। अंततः दीपक सहगल को ही मीनल का केस लड़ना पड़ता है। वह मीनल की बेल करवाता है। राजवीर सिंह का वकील प्रशांत मेहरा जाना माना वकील है और वह कानूनी दावपेच लड़ना और केस जीतने के लिए कुछ भी करने के लिए जाना जाता है। राजवीर और उसके दोस्तों का मीनल, फलक और एंड्रीया के साथ जबरदस्ती करने को प्रशांत मेहरा अलग मोड़ देते हुए कहता है, “ कुछ लॉज इसलिए बनाए थे कि सोसाइटी में औरतों का बुरी तरह से रिप्रेजेंटेशन हो रहा था..... अनफॉर्चूनेटली पिछले कुछ सालों से कई महिलाएं इन्हीं लॉज को लेकर शरीफ और डीसेंट लोगों को फसाने में लगी है। उन्हें ब्लैकमेल करके एक्सटॉर्ट करने की कोशिश कर रही है। इस केस में भी वही हुआ है।”³

प्रशांत मेहरा घटना को इस तरीके से मोड़ देता है जैसे लड़कियां खुद ही पैसे के बदले सेक्सुअल रिलेशन के लिए तैयार थीं। राजवीर के मना करने पर झुंझलाकर ज्यादा पैसे मांगते हुए मीनल ने राजवीर पर हमला किया। वह लड़कियों को पैसे के बदले फिजिकल होने वाली लड़कियों के रूप में पेश करता है और अपने दलीलों से इसी बात पर जोर देता है की लड़कियां खुद अपनी मर्जी से आई थीं।

वह इस बात के गवाह के रूप में पहले तो इंस्पेक्टर सरल प्रेमचंद जी को बुलाता है, जो लड़कियों को ही दोषी करार देती है। होटल का मैनेजर रमाकांत, होटल का वेटर मुकेश कुमार कोर्ट के सामने जताता है कि यह लड़कियां ठीक नहीं लग रही थी, उन्होंने सही कपड़े नहीं पहने थे। राजवीर का

डॉक्टर उदित हमले को जानलेवा बताता है। प्रशांत मेहरा इन सबूतों द्वारा लड़कियों को गलत चाल चलन वाली लड़कियों के रूप में पेश करता है। खासकर एंड्रीया के नॉर्थ ईस्टर्न गर्ल होने पर जोर देता है। लड़कियों की आर्थिक तंगहाली को उजागर करते हुए स्पष्ट करने की कोशिश करता है कि लड़कियों ने ही अपनी मर्जी से लड़कों को फसाने की कोशिश की है।

दीपक सहगल धीरे-धीरे इस बात को स्पष्ट करता जाता है कि कैसे पुलिस प्रशासन ने दबाव में आकर लड़कियों के विरोध में काम किया है। मीनल अरोड़ा की कंप्लेंट पहले होने के बावजूद इंस्पेक्टर सरला प्रेमचंद जी ने राजवीर सिंह की कंप्लेंट बैक डेट में जाकर लिखी थी। यह बात कोर्ट के सामने साफ हो जाती है।

प्रशांत मेहरा ने यह साबित किया था कि मीनल अरोड़ा के कई लोगों के साथ संबंध थे। दीपक सहगल इसी बात को मीनल के मुंह से भी बुलवाता है। लेकिन यह बात विशेष रूप से दर्ज करता है कि इसमें मीनल की अपनी सहमति थी। उसके कई लोगों के साथ सेक्सुअल रिलेशन थे, अपनी मर्जी से, बिना किसी दबाव के थे। राजवीर के जबरदस्ती करने पर उसने स्पष्ट रूप से ना कहा था। दीपक सहगल सहमति को स्त्री पुरुष संबंधों के विस्तृत दायरे में प्रस्तुत करता है। वह कहता है कि किसी भी हाल में और किसी भी समय बिना सहमति के सेक्सुअल रिलेशन रखना जबरदस्ती है।

प्रशांत मेहरा अंतिम कोशिश करते हुए फलक अली और प्रोफेसर जावेद की व्यक्तिगत संबंधों को कोर्ट के सामने लाकर यह दिखाता है कि प्रोफेसर जावेद से प्रतिमा ₹25000 फलक को दिए जा रहे थे। यह पैसे किसी और कारण से नहीं बल्कि सेक्सुअल रिलेशन रखने के कारण ही दिए जा रहे थे। प्रशांत मेहरा कहता है कि यह लड़कियां ऐसे ही प्रॉस्टिट्यूशन करती है। उन्होंने राजवीर से भी पैसे लिए थे और यह लड़कियां



पैसे लेकर इन लड़कों से फिजिकल होने के लिए तैयार हो गई थी। प्रशांत मेहरा के काफी उकसाने से आहत होकर फलक ऐसा न होने पर भी इस बात को स्वीकारती है कि उन्होंने पैसे लिए थे फिर भी वे इस काम के लिए तैयार नहीं थी, उन्होंने ना कहा था।

दीपक सहगल क्रॉस क्वेश्चनिंग में राजवीर के शादी तय होने की बात करता है तो राजवीर उखड़ जाता है। राजवीर के विचारों से कोर्ट अवगत होता है जो परंपरागत और पुरुषसत्ताक मानसिकता से लैस है। वह यही मानता है कि जो लड़कियां पार्टी में आ सकती है, शराब पी सकती है, ऐसी लड़कियों के साथ ऐसा ही होता है। वह बात-बात पर इरिटेड होता है, उत्तेजित होता है, गाली गलौज पर उतर आता है। मीनल के शराब पीने को उसके कैरेक्टर के साथ जुड़ता है और उसका मॉलेस्टेशन करना सही मानता है। वह मानता है कि “अच्छे घर की औरतें शराब नहीं पीती।”⁴

दीपक सहगल जब राजवीर को उसके बहन की शराब पीती हुई तस्वीर दिखाती है तो वह अपना आपा खो देता है। कोर्ट में ही दीपक सहगल को तू-तड़क में बात कर गालियां देता है। इससे राजवीर का पूरा चरित्र, उज्जडता, तुनक मिजाजी, असहिष्णुता कोर्ट के सामने आ जाती है।

अपनी अंतिम दलील को पेश करते हुए दीपक सहगल इस बात को भी स्पष्ट करता है कि लड़कियों का किसी के साथ डिनर पर जाना, किसी के साथ शराब पीना या किसी के रिलेशन में रहना उनकी अपनी चॉइस है। लड़कियों के चुप रहने को, उनकी मुस्कुराने को उनकी अनुमति समझा जाता है। उनके स्वतंत्र, आत्मनिर्भर, मॉडर्न होने को गलत नजरिए से देखा जाता है। क्या लड़कियां स्वतंत्र नहीं हो सकती? लड़कियों के पहनावे, पुरुष मित्र होने से, रात को बाहर निकलने से या उनके हंस-बोल लेने से उन्हें चरित्रहीन समझ जाए? दीपक सहगल

मीनल के प्रसंग को केवल कोर्ट के एक केस के रूप में नहीं देखता। वह पूरे समाज और समाज की मानसिकता के रूप में देखा है। दीपक सहगल क्लोजिंग स्टेटमेंट के रूप में कहता है, “ना सिर्फ एक शब्द नहीं, अपने आप में एक पूरा वाक्य है। इसे किसी तर्क, स्पष्टीकरण या एक्सप्लेन या व्याख्या की जरूरत नहीं होती। ना का मतलब ‘ना’ ही होता है माय क्लाइंट सैड नो।”⁵

दीपक सहगल अपनी इस अंतिम दलील में भी व्यक्ति के असहमति के अधिकार पर जोर देता है, जो किसी भी सभ्य समाज के बुनियादी अधिकारों में से एक है। यह सहमति और असहमति किसी भी स्त्री और पुरुष का अधिकार है। विशेषता किसी भी वर्ग, तबके, व्यवसाय, आर्थिक स्थिति की महिला, किसी भी परिस्थिति, समय में अपने सहमति को दर्ज करें तो वहां कोई भी क्यों ना हो उसे रुकना चाहिए। दीपक सहगल ‘ना’ के बारे में कहते हैं, “उसे बोलने वाली लड़की कोई परिचित हो, फ्रेंड हो, गर्लफ्रेंड हो या आपकी अपनी बीवी ही क्यों न हो।”⁶

जज साहब विस्तृत सामाजिक परिवेश और समय को देखते हुए दीपक सहगल की बात से सहमति जताते हुए लड़कियों के पक्ष में फैसला सुनाते हैं।

यहां ध्यान देने की एक बात यह भी है कि तीनों लड़कियां देश के तीन धर्म से आती हैं। मीनल अरोड़ा हिंदू है, फलक अली मुस्लिम है तो एंड्रीया क्रिश्चियन है। खास बात यह भी है कि यह घटना देश की राजधानी दिल्ली में घटित होती है। यानी लड़की चाहे किसी भी धर्म की हो अगर वह राजधानी जैसे शहर में सुरक्षित नहीं है तो फिर सुदूर क्षेत्र में उसकी क्या स्थिति होती होगी? इसीलिए यह फिल्म पुरुष मानसिकता में बदलाव की पैरवी करती है। ‘पिक’ फिल्म इस बारे में कई



वाजिब सवाल उठाते हुए जनमानस को नए सिरे से सोचने के लिए मजबूर करती है।

संदर्भ:

1. पिक - निर्देशक अनिरुद्ध राय चौधरी- समय 27.11
2. वहीं - समय 47.48
3. वहीं -समय 55.03
4. वहीं - समय 1.53.11
5. वहीं - समय 1.58.37
6. वहीं - समय 1.59.12